देवबणी री बात

कृपाविस का सामुदायिक जंगल 'देवबणी/ओरण' संरक्षण अभियान

अंक 7 अगस्त 2007

ओरण-देवबणी
पर्यावरणीय सेवाएं, जड़ी-बूटी और चारा-पाणी

आज दुनिया मे पर्यावरणीय व पारिस्थितिकी तन्त्र सेवाओं का मूल्य निर्धारण करने हेतु ज्वलन्त मुद्दा है, विशेषकर वन संसाधन के पर्यावरणीय मूल्य निर्धारण हेतु विश्व, देश तथा क्षेत्रीय स्तर पर अनेको अध्ययन, राजनीतिक समझोते तथा पर्यावरणीय सेवाओ हेतु भुगतान आदि। जंगलों से लघु वन उपज के अलावा वनों के पारिस्थितिकी तन्त्र मे जैव-विविधता, भू-जल, इको टयुरिजम, कार्बन-शोधन, परपरागण, भू व उर्वरा शक्ति आदि जैसी सेवाओं का मूल्य निर्धारण किया जा रहा है। ऐसें मे ओरण देवबणियों के संरक्षण की प्रासांगिकता और अधिक बढ जाती है।

'ओरण-देवबणी', गॉव का समूहिक जंगल, जिसे सुरक्षा की दृष्टि से किसी लोक-देवता के नाम से जोड़ दिया जाता है। ओरण देवबणियों के संरक्षण में समुदायों की भुमिका बहुत महत्वपूर्ण है जिसमें इन सामुदायिक जंगलो के सामाजिक व पर्यावरणीय पहलुओं में घनिष्ट समबन्ध है। अत: राजस्थान में ओरण परम्परा ने पर्यावरण संरक्षण एवं पारिस्थितिकी संतुलन बनाये रखने में निरन्तर योगदान है।

गाँव में यदि संरक्षित है-देवबणी।
तो मिलती है-जड़ी-बूटी और चारा पाणी॥

गाँव में अच्छे ओरण की स्थिति इस बात का प्रतीक है कि वहाँ लघु वन उपज, चारा, पानी तथा जड़ी-बूटियाँ समुदाय को पर्याप्त रूप मे मिलती है। जड़ी-बूटियों के अलावा दुर्लभ प्रजातियों के वृक्ष जैसे-काला खेर, धतूरा, गूगल, पीलू, जियापोता, ताल, धौक, कैर, कदम, गझीडा, आदि तथा 21 प्रकार के कन्द-मिर्चीकंद, सफेदकंद, सिरचियाकंद, आसकंद आदि, झाड़ियाँ

KRAPAVIS

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान
कृपाविस बणी, गांव-बख्तपुरा, पो० सिलीसेढ़
जिला अलवर-301001 (राजस्थान)
ई-मेल:krapavis_oran@rediffmail.com

सम्पादन : अमनसिंह व प्रतिभा सिसोदिया

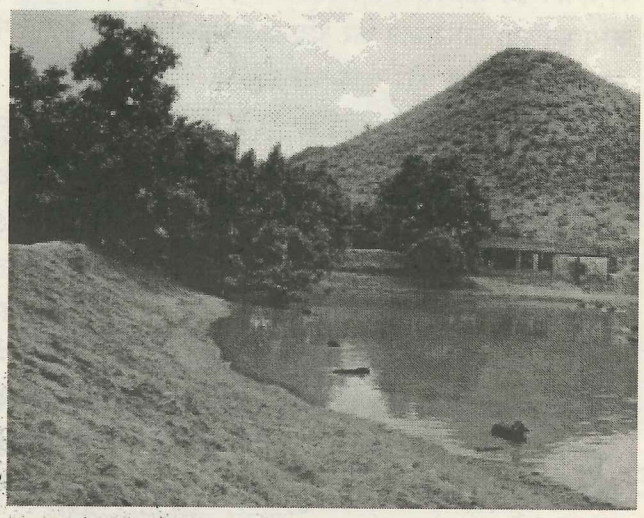

व अन्य वनस्पतियाँ के संरक्षण की स्थली भी ये ओरण देवबणी ही रहे हैं। जैव-विविधता की दृष्टि से आरणों में अनेको वन्य प्राणी जैसे: हिरण, नीलगाय, सांभर, साँप, नेवला, बिच्छू, गोह, गीदड़ आदि, तथा अनेकों प्रकार की चिड़ियाएं विधमान होती हैं। इन वन्य प्राणियों का प्राकृतिक संतुलन बनाये रखने मे बड़ी भूमिका हैं।

ओरण व देवबणियों का बहुत बडा योगदान पानी के संरक्षण मे भी है चुकिं ओरण तथा आस-पास के क्षेत्र में वर्षा के जल को एकत्रित करने के लिए प्राय: जोहड़, तालाब, तलाई, बावड़ी, आदि बनाये जाते थे जिससे ओरण मे विद्यमान वृक्षों को नमी मिलती थी तथा गाँव में पूरा जीवन पशु-पालन पर आश्रित होने के कारण पशुओं को पानी पीने के स्त्रोत भी यही होते है। समुदाय इस बात को समझते है कि यदि ये जंगल नष्ट होते है तो इसका सीधा प्रभाव उनके जीवन-यापन पर पड़ेगा।

ओरणा देवबणियों मे लगने वाले सांस्कृतिक मेले, भण्डारे व समुदायों के लोगो का इनमें लगातार आना-जाना आज के तथाकथित इको-टयुरिजम से कही अधिक प्रभावी था। वायुमण्डल में कार्बन की अधिकता को लेकर सारा विश्व चिन्तित है जिसका भी हल इन आरेण देवबणियों में है चूंकि जितना ये छोटे-छोटे जंगल संरक्षित रहेगे उतना ही अधिक कार्बन इनके द्वारा चुसा जा सकेगा। अत: ओरण देवबणियों का संरक्षण करना आज की बड़ी आवश्यकता है जो हमारे देश में लगभग 10 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल पर आच्छादित है।

जुगरावर की रूंध देवबणी-जहाँ एक साधु द्वारा जंगल व वन्य प्राणियों को बचाने के अथक प्रयास

'महात्मा जी आपने तो इस देवबणी को बहुत अच्छा वन्य अभ्यारण बना रखा है', यही तो मेरे लिए परेशानी का कारण बन गया है भैया, महात्मा जी/साधु ने जवाब दिया। 'जुगरावर की रूंध' नामक देवबणी/आरेण के साधु पर कुछ लोगो ने बलात्कार के प्रयास जैसा झुठा आरोप लगाकर उन्हे इस देवबणी से भगाने की साजिश रची जिससे कि इस देवबणी के जंगल व वन्य प्राणियों को समाप्त कर चंद प्रभावशाली लोग इस जमीन पर खेती या अन्य कोई कार्य कर सकें।

'जुगरावर की रूंध देवबणी' राजस्थान के अलवर जिले की रामगढ़ तहसील के जुगरावर नामक गाँव में स्थित है। इस गाँव की कुल जनसंख्या 1500 है तथा कुल परिवारों की संख्या 250 है। जिसमे 75 परिवार अनुसूचित जाति के, 40 परिवार अनुसूचित जनजाति के तथा 80 परिवार पिछडी जाति के हैं। 'जुगरावर की रूंध देवबणी' का क्षेत्रफल 595 बीघा है जो वर्तमान में राजस्व रिकार्ड के अनुसार चारागाह श्रेणी में दर्ज है। इस देवबणी/ओरण की स्थापना के विषय में बताया जाता है कि यह सैकडों वर्षो से है। इस बणी का नाम जुगरावर जोगेश्वर महात्मा जी के तपस्या करने पर जुगरावर पड़ा।

श्री श्री 108 रायसिंह नाथ जी ने जुगरावर की रूंध में उन्हाने गाय का दुध व गंगा जल से फुलदार घोटते हुए 595 बीघा क्षेत्रफल का एक चक्कर लगाया उसके बाद से गाँव के लोग इस क्षेत्र में पेड-पौधे नही काटते तथा तब से ही इस बणी में पेड-पौधों का विकास होने लगा। यदि ऐतिहासिक पृष्ट भूमि को देखे तो सन् 1907 में जहाँ-जहाँ पर जो जंगल थे उन्हे अलवर रियासत के तत्कालीन महाराजा ने रूंध घोषित करके आरक्षित कराया जाने लगा था अत: इस जंगल को भी रूंध आरक्षित कर दिया था तथा इस प्रकार इस जंगल के नाम मे रूंध शब्द जुड गया था। रूंध का मतलब होता था आरक्षित चारागाह जंगल।

इस देवबणी में सघन पेड़-पौधे, घास, पशु-पक्षी तथा जानवर आदि विकसित हैं। यहाँ पीलू के वृक्षों की बहुतायत है। 'पीलू' एक देशज सदाबहार तथा छोटा आकार का सुन्दर वृक्ष है जिसका वैज्ञानिक नाम सालवेडोरा ओलीओइडीज है। इस देवबणी में अन्य वृक्ष जैसे: झीड़ा, खेरी, धोंक, देशी बबुल, कैर, पीपल, बरगद, नीम, बीलपत्र, पापडी, अरडू, कैरन्ज, आम, सरस, गुलर, अनार, करूँजा आदि भी पाये जाते है जिनकी संख्या लगभग 30000 से 40000 हजार है। इनका उपयोग औषधि बनाने, पशुओं के चारे के रूप मे, आचार, फल, छाया आदि के लिए किया जाता है । इस बणी मे कई वनस्पतियाँ तो ऐसी हैं जो पूर्व मे नही थी तथा वर्तमान मे हैं जिनमे पीपल, बरगद,

नीम, गुलर, तथा बीलपत्र मुख्य हैं जो 15-20 वर्ष से साधु के लगाने से ही जुगरावर की रूंध देवबणी में मिलते है।

जैव-विविधता की दृष्टि से इस ओरण मे अनेकों वन्य प्राणी जैसे:- रोजडा, सियार, जरख, सर्प, हिरण, चुहा, नीलगाय, सांप, नेवला, बिच्छू, गोह, गीदड़, तथा वन्य पक्षियों में मोर, तोता, कबुतर, मधुमक्खियाँ तथा अनेकों प्रकार की चिड़ियाएं विद्यमान है। इन सब वन प्राणियों का प्राकृतिक सन्तुलन बनाये रखने में बड़ी भूमिका है।

यह बात भी उल्लेखनीय है कि ये वन्य प्राणी यहाँ के साधु, समुदायों व धार्मिक स्थली के बलबूते पर ही बचे हुए हैं जबकि यहां कोई जंगलात विभाग इनकी देख-रेख नही करता। यहाँ चिड़ियों को चुग्गा डालने तथा चीटियों को आहार डालने की प्रथा भी अविरत चल रही है। चुग्गे के लिए साल भर का पर्याप्त अनाज उपलब्ध रहे इस हेतु सावड/शक प्रथा प्रचलित है। जो किसान अपने अनाज गेहुँ के ढेर मे से जो शक/सावड अनाज के रूप मे निकालते हैं उस अनाज को देवबणी के भण्डार मे पहुँचाते हैं। यहाँ रोजाना 35 से 40 किलोग्राम अनाज चुग्गें के रूप में डाला जाता है।

जन्माष्टमी के दिन इस बणी मे भागवत कथा, मेले, यज्ञ, भण्डारे का भी आयोजन किया जाता है। श्री प्रहलाद जाट, श्री राम खिलाड़ी मीणा, श्री हरफुल मीणा तथा श्री रामवतार सैनी आदि कई ज्ञानवान लोगो ने बताया कि इस देवबणी मे वन्य प्राणियो मे रोजडो तथा मोरों कि संख्या बढ रही है जिसका कारण बणी के साधू द्वारा चुग्गा तथा दाना पानी की व्यवस्था है तथा ये साधू ही इस देवबणी की देखभाल व सुरक्षा करते है। तथा आगे बताया कि इस देवगबणी में 15-20 वर्ष पूर्व तक बाघ पाये जाते थे लेकिन शिकारियो द्वारा शिकार करने पर वो नष्ट हो गये। इस देवबणी से चारा उपलब्ध होता है तथा इस बणी मे बन

संबधी ईधन तथा ईमारती लकडी आदि की कोई समस्या नही है लेकिन लकडी कोई भी काम में नही लेता। इस बणी में वन्य प्राणियो पालतू पशूओ सम्बन्धी भी कोई समस्या नही है ।

यह देवबणी शुरू से ही चारागाह के रूप में इस्तेमाल होती रही है जिसमें पेड व घना जंगल व घास है। इस देवबणी में ग्रामवासियो की मवेशी व गायें चरती हैं। जिसमें उनका पालन पोषण होता है। जुगरावर गॉव के पशुधन में गाये 150, भैसें 500, भेड 10, बकरी 1000, ऊँट 20, तथा अन्य पशु जैसे : घोडा,घोडी, आदि हैं। इस बणी में 3 जोहड व 1 कुआँ है जिसमें पशु पानी पीते है तथा नहाते हैं।

जुगरावर की रूंध देवबणी के साधू बाबा बाल भारती का वन्य प्राणियो व इस देवबणी के जंगल संरक्षण हेतु उनके सर्मपण के अनेको उदाहरण है । सन 1998-99 व अन्य सालो में देवबणी व इसके आस पास हुऐ मोरो के शिकार के खिलाफ जब कोई जंगलात विभाग या अन्य सरकारी व गैर सरकारी समाज राजनेता आगे नही आया तो इन्ही साधु ने न्यायलाय में इस्तगासा /गुहार लगाई तथा दोषियो को सजा दिलाने के हर स्तर पर प्रयास किये। साधू ने अपने इस्तगासे में लिखा कि इस बणी में कुछ लोग एक साथ गिरोह बनाकर रहते है और उस गिरोह ने पुलिस थानें में साँठ गाँठ कर रखी है। ये लोग हरी लकडियाँ काटकर व पशु ,पक्षियों तीतर, मोर, नीलगाय व खरगोश को मार कर ले जाते हैं और उनका माँस बेचते हैं, तथा जो हडडीया बचती है उन्हे धुने पर फैकतें है।

इस बात की पुष्टि पशु चिकित्सालय प्रभारी बई दामेन अलवर द्वारा उसकी रिर्पोट से भी होती है ''कि रूधं जुगरावर क्षेत्र में घायल मोरो की चिकित्सा आज दिनांक 2-12-2002 को मौके पर कर दी गई है एवं पक्षियों स्वस्थ होने तक निरन्तर जारी रहेगी। मृत्य मोरो का शव परीक्षण कर दिया गया है। प्रथम दृष्टि में मोरों की मत्यु किसी जहरीले समान के खाने से हुई लगती है। समान की पहचान के लिए पैगाल एकत्रित कर एफ. एस. एल. जयपुर को भेजे जा रहे है। अत: अन्तिम निदान एफ. एस. एल. से रिपोर्ट आने बाद ही संभव है।''

वर्तमान साधु से पहले श्री श्री 108 बाबा रामसिंह नाथ विराजमान थे उन्होने इस स्थान पर समाधि ले रखी थी उसके बाद कई बाबाजी इस स्थान पर आते जाते रहे। सन् 1993 में रघुवीर नाथ जी बाबा यहॉ पर विधमान थे उनके द्वारा इस देवबणी से अतिक्रमण हटाने के कारण कुछ लोगो ने बाबा रधुवीर नाथ जी का कत्ल कर दिया था। फिर 1994 से वर्तमान साधू बाबा बाल भारती इस स्थान पर आये जो जुगरावर की रूंध देवबणी संरक्षण के कार्य को समर्पित है।

देवबणी पर हुए प्रभावशाली लोगो के कब्जे के संम्बध में साधु ने मुख्यमंत्री, जिलाधिश, डी.आई.जी. आदि को पत्र लिखकर गुहार लगाई कि 260 बीघा चारागाह जुगरावर की रूधं बणी पर से अतिक्रमियों को हटाकर जीमन साफ करवाये व दोषी लोगो को गिरफतार करावें। वर्तमान में साधु ने वहाँ के जागरूक समुदायों को साथ लेकर तथा कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास सर्स्थान (कृपाविस/ कृपा संस्था) बख्तपुरा के साथ मिलकर इस देवबणी के पुनरोत्थान हेतु कार्य किये है:

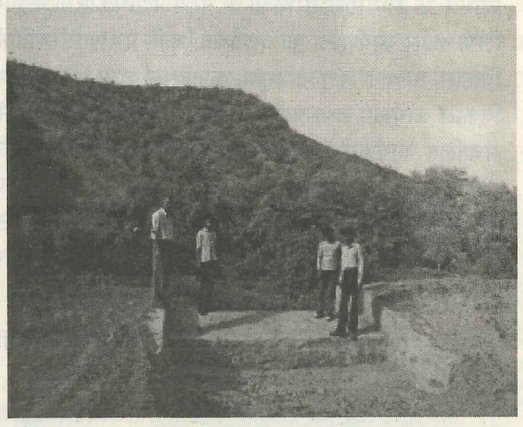

- तालाब की पक्की पाल का निर्माण किया तथा उस तालाब का गहरीकरण किया।
- पशु व वन्य प्राणियों हेतु जल उपलब्धता सुनिच्चित करने हेतु नई खैली का निमार्ण तथा पुरानी जर्जर पडी खैलियों की मरम्मत व पुनरोत्थान किया।
- मिटटी कटाव व नमी रोकने हेतु छोटे 'टक' चैकडेम का निर्माण किया।
- इस देवबणी में स्थानीय प्रजाति के पौधों का वृक्षारोपण किया तथा आसपास खेत पर व देबवणी के तालाब की आगोर में फलदार पेड लगाए गये।
- देवबणी के बेहतर प्रबन्धन हेतु संगठन का गठन व रजिस्ट्रीकरण कराया।
- सास्कंतिक कार्यक्रर्मो (जैसे: प्रति वर्ष तप, सत्संग, प्रवचन, भण्डारा) आदि का आयोजन।

इस साधु ने अपने ऊपर झुठे मुकदमें जैसे आरोप लगने पर भी अपने वन्य प्राणियो व जंगल बचाने के प्रयासों को ढीला नही होने दिया बल्कि प्रयासो में और अधिक तेजी लाने हेतु वहाँ के आस पास के समुदायों को साथ लेकर 1 जूलाई 2005 को एक संगठन का गठन व रजिस्ट्रीकरण कराया इस संगठन के उद्देश्य इस देवबणी को संरक्षित व सुरक्षित रखने हेतु तय किये।

आदर्श देवबणी है रूधं जुगरावर।
जिसमें खग मृग बंद आनंदित रहहीं आकर॥

ओरण देवबणियों के संरक्षरण व प्रबंधन हेतु स्वंयसेवी संस्थाओं का साझा आंदोलन

दूदू, जयपुर में देवबणी/ओरण प्रबंधन व संरक्षण विषय पर 22 जुलाई 2007 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला मे राजस्थान, विशेषकर जयपुर सभांग की विभिन्न 35 स्वंयसेवी संस्थाओं के मुख्य पदाधिकारियों ने भाग लिया । इस कार्यशाला का आयोजन 'कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान' (कृपा संस्था/कृपाविस) द्वारा, विश्व संघ विकास कार्यक्रम तथा पर्यवारण शिक्षण केन्द्र के सहयोग से, संचालित कार्यक्रम 'स्थानीय जैव-विविधता सम्बन्धित नीति और समुदायों की आजीविका हेतु ओरण देवबणीयों का संरक्षण हेतु एडवोकेसी कार्यक्रम' के तहत किया गया। इस कार्यशाला के आयोजन में 'खेती एवं गाँव विकास संस्थान उरसेवा' स्थानीय सहयोगी संस्था थी।

कार्यशाला की चर्चा में ओरण/ देवबणियों की वर्तमान स्थिति को लेकर निम्न बिन्दु निकल कर आये:

1. ओरण/ देवबणियों पर मालिकाना हक राजस्व विभाग/वन विभाग का है।
2. 80 प्रतिशत ओरण/देवबणियों पर (प्रभावी लोगो कम्पनियों/ सरकार/पुजारियों आदि)का अतिक्रमण है।
3. ओरण देवबणी के संरक्षण के प्रति जुडाव, स्वामित्व, अच्छी प्रथायें, सहयोग व श्रमदान की भावना में कमी।
4. ओरणों की भूमि का सरकारी एवं निजी कम्पनियों द्वारा दुर्पयोग (जैसे: रतनजोत उगाने के नाम पर भूमि का आवंटन)।
5. वन्य प्राणी व जंगल प्रजातिया खत्म हो रही है।
6. आयुर्वेदिक उपचार पर लोगो का रूझान ना होने से ओरणों में वनस्पति संरक्षण नही हो रहा है।
7. पुजारी/साधु यानि ओरण देवबणी के गार्ड रक्षक)के रहन सहन, खान-पान सम्पूर्ण व्यवस्था गाँव स्तर पर सामूहिकता से होती थी पर वर्तमान मे यह व्यवस्थाऐ नही होने पर पुजारी/साधु भी इनसे अपना ध्यान हटाकर अन्य स्थानों पर जाने लगे है। इससे प्रबंधन मे गिरावट आई है।
8. पानी, औषधि, चारा, फल, लकड़ी आदि आजीविका के संसाधन प्राप्त होते थे लेकिन अब मालिकाना हक नही होने के कारण संसाधनों पर पहुच बाधित हुई है।

कार्यशाला मे ओरण व देवबणियों के संरक्षण व प्रबंधन हेतु स्वंयसेवी संस्थाओं ने निम्न सामूहिक सुक्षाव व निर्णय लिये:

- संरक्षण समुदाय आधारित बनाना, इसको लेकर जो अध्ययन किया जाये वह ग्रामीण लोगों के द्वारा हो, जो अभियान के रूप में चले, पुन: विकास के लिए पंचायत व ग्रामीण समुदाय द्वारा प्रस्ताव दिया जायें।

- पेड-पौधे, जीव-जन्तुओं के विलुप्त प्रजातियों को तलाशा जाये तथा बची हुई शेष प्रजातियों के संरक्षण के लिए उपाय खोजना तथा उसकी क्रियान्वित करना, प्रजातियों के खत्म होने से पर्यावरण पर पडने वाले प्रभाव की जानकारी सभी हितग्राहियों को देना ।
- आजीविका संवर्धन सम्बन्धित विभिन्न उपाय जैसे: ओरण मे मवेशी चराने पर शुल्क तय किया जा सकता है, घास खुदाई का ठेका दिया जाकर, पेड़ो की पत्तियों को बेचकर/ बोली लगाकर, पेडो से प्राप्त आर्थिक महत्व की वस्तुओं जैसे: गोंद, मधुमक्खी का शहद आदि। फलदार पेड़ो का वृक्षारोपण द्वारा जैसे: कैर, आँवला, बैर, नीबू, फूल वाले पौधे, औषधीय पौधे लगाकर, चार दिवारी के रूप में मेहंदी के पौधे लगाकर। मेलों के आयोजन, भजन-कीर्तन, गोठ के दौरान, दुकानों की जगह किराये पर निर्धारित शुल्क तय करके दी जावें।
- आजीविका के साथ संरक्षण की गतिविधियों को जोडना रखरखाव मे स्थानीय लोगो को रोजगार उपलब्ध करवाना एवं हर एक व्यक्ति की भागीदारी होनी चाहिये।
- स्थानीय प्रजाति के पौधो का वृक्षारोपण कराना चाहिए।
- ओरण/देवबणीयों का अतिक्रमण से मुक्त किया जाना चाहिए व कानूनी प्रक्रिया इस प्रकार बनाई जाये कि देवबणी सार्वजनिक सम्पंदा बन सके।
- ओरण संरक्षण के वर्तमान कानून के बारे में जानकारी व संशोधन हेतु सरकार पर दबाव बनाना।

इस कार्याशाला की श्रृंखला में राजस्थान के अन्य भागों में सम्भागीय स्तर पर कार्यशालाये आयोजित की जायेगीं। जिस से राजस्थान में ओरण देबवणियों के संरक्षण व कानूनी मान्यता दिलाने हेतू एक आंदोलन खडा हो सके। समुदाय इनके संरक्षण में पुन: जुट सके।

ओरण/देवबणी प्रबंधन प्रशिक्षण

ओरण देवबणियों के विकास, प्रबंधन व संरक्षण हेतु 'कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान' (कृपा संस्था/कृपाविस) नियमित प्रशिक्षण आयोजित करता है। यह प्रशिक्षण ग्रामीण स्वयं सेवकों, आरेण पर जिज्ञासा व जानकारी रखने वाले बुजुर्ग व युवा, महिलाऐं, ग्राम पुजारी-साधु, सामाजिक कार्यकर्ता, स्वंय सेवी संस्थाओं के कार्यकताओं व पदाधिकारी आदि हेतु होता है। प्रशिक्षण का उद्देश्य ओरण प्रबंधन पर क्षमता बढाना व जागरूक करना है।

प्रशिक्षण निम्न बिन्दुओं जैसे: ओरण /देवबणीयों की अवधारणा, प्रबंध व्यवस्था, ओरण की वर्तमान स्थिति, ओरण के ह्रास होने के कारण, सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक मान्यताऐ/लाभ/हानि, जंगल बचाने की प्राचीन सामुदायिक व्यवस्था, वर्तमान सरकारी व्यवस्था एवं इनके आपसी समन्वय की संभावनायें, ओरण विकास, चारागाहा, पशुपालन तथा ओरण विकास में महिलाओं की भूमिका आदि पर दिया जाता है। प्रशिक्षण विभिन्न तरीकों जिनमें कृपाविस द्वारा अब तक के अध्ययन के आधार पर प्रस्तुतिकरण, वार्ता, ऑडियों-विडियों शो, सामुहिक चर्चा, प्रकाशित व अप्रकाशित सामग्री का वितरण, पी.आर.ए. अभ्यास करके समझना, नज़री नक्शा तैयार करना, एक्सपोजर विजिट, ओरण सामलाती जीवन शैली की केस स्ट्रडीज, गाँव के ओरण पुनरोत्थान हेतु कार्य योजना बनाना आदि।

कृपाविस द्वार पिछले 2 माह में 6 से 8 जुलाई तथा 12 से 14 अगस्त 2007 में 3 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किये गये। इनमें चुन्निदा 25 ग्रामीण महिलाओं, पुरूषों, युवा, ग्राम पुजारी-साधु, तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। इसी तरह आगामी महिनों मे भी ओरण देवबणियों के विकास, प्रबंधन, संरक्षण हेतु, प्रशिक्षण आयोजित किये जायेगें।

प्रशिक्षण के लिए कृपाविस में पाठ्यक्रम, पाठ्य सामाग्री व पाठ्य पुस्तिकाए, डोक्युमेन्टरि फिल्म, ऑडियों विडियों सामग्री, मेन्यूअल, एक्सपोजर विजिट हेतु मॉडल देवबणियां-ओरण विकसित कर रखे हैं।

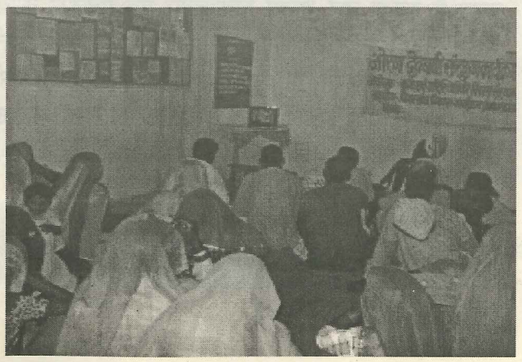

पशु स्वास्थ्य ग्राम्य स्तरीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण

कृपा संस्था/कृपाविस लगभग प्रतिवर्ष एक माह अवधि का पशु स्वास्थ्य ग्राम्य स्तरीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण का आयोजन करता है। इसमे विभिन्न बिन्दुओं जैसे- टीकाकरण, पशु स्वास्थ्य, पशुपालन विकास हेतु चाहागाह विशेषकर आरेण देवबणियों के प्रबंधन व संरक्षण हेतु ग्रामीणो को सहयोग, पशुओं को स्वच्छ जल हेतु खेली-कुआँ निर्माण, पशु नस्ल सुधार, प्रबंधन तथा पशुओं में मौसमी बिमारी व प्राथमिक उपयार, परम्परागत तथा उन्नत विधियों द्वारा, समस्या एवं समाधन, पशु के खान-पान, रहन-सहन, आदि पर कार्य क्षमता बढाना है।

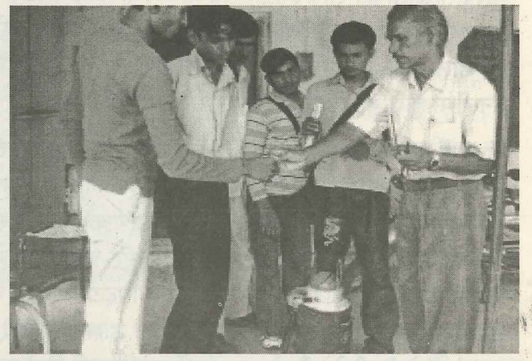

कृपाविस द्वारा आयोजित इस वर्ष का एक माह अवधि का 'पशु स्वास्थ्य ग्राम्य स्तरीय कार्यकर्त्ता' प्रशिक्षण कृपाविस केन्द्र बखतपुरा में 18 अगस्त 2007 को सम्पन्न हुआ। इस प्रशिक्षण में दूर-दराज के दस गाँवो से शिक्षित दस युवाओं का कृपाविस द्वारा चयन किया गया था। जिसका उद्देश्य इन युवाओं को पशु स्वास्थ्य, आवास तथा पशु संवंधन हेतु ग्राम स्तरीय कार्यकर्ता के रूप में विकसित करना था। प्रशिक्षण की अवधि एक माह की थी।

पशु चिकित्सकों एवं गाँव के गुणी देशी जडी बूटियों के विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया, जिनमे पशुपालन विभाग के सहायक निदेशक डॉ. ऐ. के. सिहं, डॉ. सीताराम वर्मा , श्री सुरेन्द्र कुमार पँचाली तथा गाँव के गुणी श्री आंधाराम गुर्जर, आई. आई. टी. दिल्ली के विशेषज्ञ डॉ. सन्तोष कुमार शर्मा, मध्य प्रदेश के राहुल यादव, कृपाविस के वरिष्ठ पदाधिकारी व अनुभवी कार्यकताओं आदि थे। इस प्रशिक्षण के मुख्य प्रशिक्षक पशु चिकित्सक श्री रामस्वरूप यादव थे जो कृपाविस में पशुपालन प्रकोष्ठ के समन्वयक हैं।

इस प्रशिक्षण के लिए कृपाविस ने 'मवेशी-पालन व प्रबंधन पुस्तिका' नामक पाठ्य पुस्तिका, डोक्युमेन्टरि फिल्म, ऑडियों विडियों सामग्री, तथा अन्य पाठ्स सामग्री विकसित कर रखी है। एक्स्पोजर विजिट हेतु सरकारी पशु चिकित्सालयों से सम्पर्क है।

परम्परागत पशु चिकित्सा और ओरण/देवबणी

ज्यादातर देशी जड़ी-बूटियां आरेण-देवबणियों तथा चारागाहों, जहाँ पर भेड बकरियाँ चरती है, मिलती हैं, इन पर कृपाविस अध्ययनरत है। कृपाविस ने विभिन्न ओरण-देवबणियों में मोसमी बीमारियाँ तथा उनके परम्परागत उपचार का सर्वे करवाया तथा परम्परागत पशु चिकित्सकों (गुणी)के साथ कार्यशालाओं का आयोजन तथा उनके साक्षात्कार किये, जिसके आधार पर इस आलेख में जानकारियां दी जा रही हैं। आधुनिक चिकित्सा पद्वति के हिसाब से ये कितनी सटीक हैं यह कह पाना तो मुश्किल है लेकिन लोग इसे परम्परागत रूप से कार्य करते हैं। देवबणी ओरणों में पाये जाने वाले विभिन्न प्रजातियों के पेड़ो की छाल, पत्ती, जड़, तना आदि द्वारा जो उपचार किया जाता है उन में से कुछ का विवरण निम्न प्रकार है।

कब्ज में पशु को कडीयाला की फली कूटकर छान कर देते हैं या पिलू या छाल की पत्तियों को उबले हुये गेहुँ के दाने व बबूल की फलियों को एक साथ पिसते हैं। इस मिश्रण को खिलाने से पशु को आराम मिलता है। बांग (खुर पका/मुँह पका) रोग में पशुओं के खुरो पर झाड की जड कुट कर व मिट्टी के बर्तन में उबालकर पकने तक ठण्डा करके खुरो पर डालना चाहिऐ। खुराक में देशी घी देते है। प्याज चबाऐं तथा मेंहन्दी पिस कर पिलातें है।

जानवरों के बच्चों में दस्त होने पर एक तोला राई पिस कर छाछ के साथ देने से आराम मिलता है। अगर पिड पड रही है तो 10-20 ग्राम नीम की पत्तियों का रस पिलाना चाहिऐ। अफारा के बीमार पशु को मुख्यत: पेट के एक बडे भाग मे हवा भर जाने के कारण बांयी कोख का अधिक फुल जाती है। अगुलियों से बजाने पर ढोल की तरह अवाज आती है। जिसकी चिकित्सा हेतु 100 ग्राम अजवान, 200 ग्राम प्याज और बरगद की आकाशीय जडो को एक साथ मिलाकार पशु को देने से उसे तुरन्त आराम मिलता है। पशु के पेट में गैंस होने पर 10 ग्राम हींग को 500 ग्राम खाने वाले तेल मे मिलाकर देवें इस से पशु को जल्दी आराम मिलता है।

पशु के गलते जख्म को साफ करने के लिए नीम की पत्तियों को उबाल कर पानी को ठण्डा कर के जख्म को धोतें है तथा जख्म पर हल्दी, घी, तथा नीम छाल का पाउडर मिलाकर जख्म पर लगाते हैं। पशु के कान बहने पर पशु के कान को नीम के पानी से साफ करके कान मे सुख दर्शन के पत्तो को गर्म करके उसका रस डालते हैं।

धतुरा के पत्तो और कोपलो से तैयार बूँटी को पेट दर्द, आँख की पुतली के फुल जाने पर, मुहँ और गला सुख जाने पर, पशु के पेट में गैंस का बनना पेट दर्द जोडो के सुजन व टिनेस मे देते है। जोडो के दर्द मे गिलसरीन मिलाकर लगाने से दर्द कम हो जाता

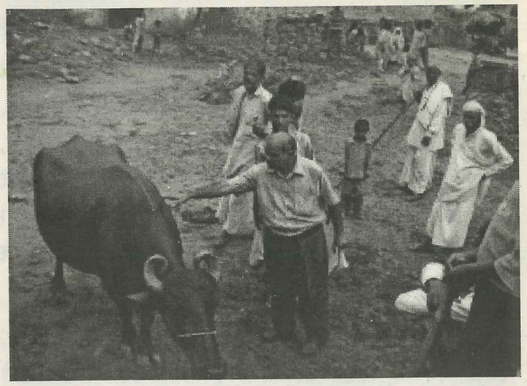

है। ज्यादा मात्रा मे देने से यह जहर है। 10 से 15 ग्राम तक देवे।

सोफ को बद हजमी, अफारा, खाँसी बदबुदार दवाईयों के नापसन्द स्वाद को छिपाने के लिये और जुलाब के साथ ऐंठन को कम करने के लिये दिया जाता है। सोंठ जो एक पौधे की गाँठ होती है। सुखे सोंठ व गीले अदरक को मिलाकर देते है, जिससे आम तौर पर जुलाबो की खरास को दुर करने के लिए देते है। पेट दर्द अफारा में इसको दुसरी चीजो के साथ मे देते है।

अलसी के आटे की पुलटीस बनाकर सेक करते है 4 भाग अलसी का आटा, 10 भाग उबलता हुआ पानी लेकर गांठ होने तक उबाले तथा पुलटीस को चोट के स्थान पर लगाते है। अलसी की खली आहार के रूप मे भी खिलाते है। 1 पौंड अलसी और 10 लीटर पानी डालकर लिनसीड टी बनाकर घोडों व पशु को तैयार करने के लिये देते है लिनसीड टी को गला, पेट व आतँ गुर्दे क खरास मे देना लाभदायक है। इसके तेल की खुराक पेट सफाई मे फायदा करती है एवं इसका ऐनिमा देते हे। थोडा-थोडा तेल प्रतिदिन देने से पशु के शरीर पर व बालों पर चमक आ जाती है।

भाँग जो एक नशीला पौध होता है, के पत्ते तोडकर एवं पीसकर काम में लेते है यह आँतों की ऐंठन व दर्द को कम करता ह व आराम मिलने पर पशु को नींद में लता है व टिटनेस की जकडन को भी कम करता है। अॅडोला-इस के बीज को अॅडोली कहते है इसका तेल भीतरी निकालकर एवं फिलटर करके कस्टर आँयल बनाते है। भीतरी तौर पर इसको पेट साफ करने व कब्ज को दुर करने के लिए दुध मे देते है। आँख मे भारी चीज गिर जाने पर इसको आँख मे डालते है। (यह आलेख रामस्वरूप यादव, पशु चिकित्सक द्वारा लिखित है।)

उन्नत मवेशी घर भर देसि।
बेकार मवेशी, जल-जमीन-जंगल बर्बाद कर देसि॥

वन विभाग द्वारा देवबणी संरक्षण-शिल की हरडी केस स्टडी

शिल की हरडी शैलेश्वर महादेव की देवबणी राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 8 पर स्थित पडासोली गाँव से 7 किमी दूरी पर गैजी गाँव मे स्थित है। उक्त स्थान जयपुर जिले की दूदू तहसील में स्थित है। इस देवबणी क क्षेत्रफल लगभग 40 है क्यटर है तथा देवबणी के संरक्षक श्री शैलेश्वर महादेव का मन्दिर इस क्षेत्र की एक बडी पहाड़ी की तलहटी में स्थित है।

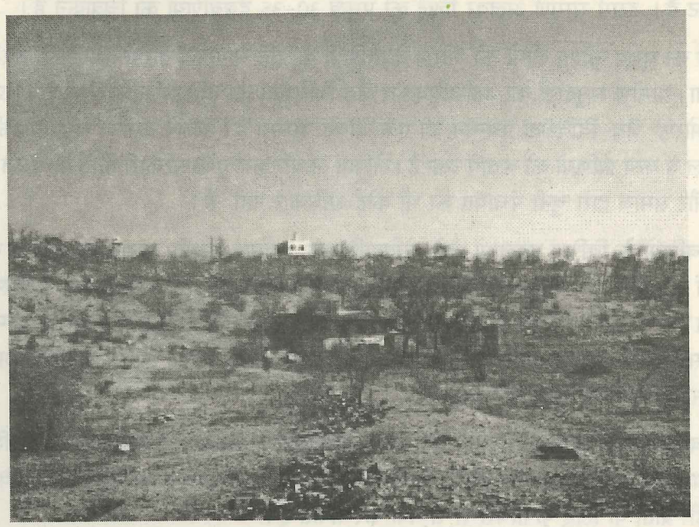

राजस्थान सरकार की वन विभाग द्वारा 'राजस्थान वानिकी व जैव विविधता परियोजना' के तहत निम्न गतिविधियाँ इस देवबणी के 40 हैक्टेयर क्षेत्र में की गई:

- वृक्षारोपण
- घास का बिजारोपण
- ट्रेचिंग/खाडा खुदाई
- चारो तरफ खाई/बाउण्डरी खुदाई
- तालाब/नाड़ी गहरीकरण
- टांका/हौद निर्माण

श्री शैलेश्वर महादेव के प्रति अगाध श्रृद्धा प्रेम और विश्वास होने की वजह से ही पहाडी पर लगे हुये वृक्षों की कोई कटाई नहीं करता हे। इस वजह से पहाड़ी पर घना जंगल बचा हुआ है।

5 गाँव के लोगो ने मिलाकर एक समीति बनाई है जिससे श्री शैलेश्वर महादेव विकास समीति के नाम से जाना जाता है। यह समीति श्री शैलेश्वर महादेव के मन्दिर विकास के लिए एवं पहाड़ी पर स्थित जंगल की रक्षा के लिए काम करती है। यदि कोई वृक्ष काटता है तो यह समीति उस व्यक्ति पर जुर्माना करती है। पहाड़ी के ठीक ऊपर एक माताजी का स्थान भी है जिसकी मान्यता के कारण भी जंगल बचाया हुआ है।

इस मन्दिर में जंगल संरक्षण के संकल्प को दोहराने के लिए प्रतिवर्ष शिवरात्रि को सांस्कृतिक मेले व भण्डारे का आयोजन भी किया जाता हैं तभी तो यहाँ यह छन्द प्रचलित है:

शैलेश्वर की बणी में भक्तो की धूम मची।
आओ गाँव का लोगो करलो दर्शन हो जाओ सुखी॥

कहा जाता कि पुष्कर में बह्माजी ने यज्ञ करवाया था उस वक्त चार महादेव की मूर्तियां निकली थी। उन में से एक महादेव की मूर्ति को शिल की हरडी पर स्थापित किया गया कहा जाता है कि शैलेश्वर महादेव के चमत्कार एवं प्रभाव से प्रभावित होकर नजदीकी गाँव पडासोली के लोग महादेव के पिण्ड को अपने गाँव ले जाना चाह रहे थे। इस पिण्ड को जबर दस्ती उठाकर लेकर जाने पर भी जब यह पिण्ड नही गया तो गाँव वालो ने गुस्से में इसके लात दे मारी जिससे यह पिण्ड आज भी पटी हुई है।

गैजी गाँव के ज्ञानवान लोग-श्री नारायण बलाई, श्री कानाजी मीणा, कन्हैया लाल शर्मा, सज्जनपुरी, रामजीलाल शर्मा व यहाँ के साधु श्री मोहन लाल ने बताया कि यह बणी शिल की हरडी शैलेश्वर महादेव का स्थान बहुत प्राचीन है। इस स्थान पर राजा-रजवाडो के समय से इस बणी की मान्यता रही है। जयपुर रियासत के पूर्व महाराजा जयसिंह जी भी यहाँ पर दर्शन करने आये थे। शिवरात्रि, बैसाख एवं श्रावण माह में यहाँ पर पुरे माह मेला भरा रहता है।

उक्त ग्रामीणों ने बताया कि इस बणी में 20-30 वर्ष पूर्व तक हिरण, जंगली सुअर, ल्याणी, गरजडा, शेवलिया, सफेद एवं काले काँवले पाये जाते थे। लेकिन ये अब विलुप्त हो गये हैं जिसका कारण इस ओरण बणी से जंगल समाप्त हो गये है। 20-30 वर्ष पूर्व रोजडी, नीलगाय बहुत कम संख्या में पाये जाते थे लेकिन आज उनकी संख्या बहुत ज्यादा हो गई है ग्रामीणों का यह भी मानना है कि वन विभाग ने इस बणी के पुनरोत्थान का कार्य तो किया लेकिन लोगो की सहभागिता से नही किया है।

ओरण -देवबणी री बात : एक डाक्युमेन्ट्रि फिल्म

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपा संस्था/कृपाविस) द्वारा ''ओरण-देवबणी री बात'' नामक एक डोक्युमेन्ट्रि फिल्म का निर्माण स्थानीय जैव विविधता सम्बन्धित नीति और समुदायों की आजीविका हेतु ओरण देवबणीयों का संरक्षण हेतु एडवोकेसी कार्यक्रम के तहत किया गया। इस फिल्म के निर्माण में भारतीय युवा चलचित्र संस्थान द्वारा निर्देशन व तकनीकि मदद की। फिल्म की अवधि 35 मिनिट है। इसमे सम्पूर्ण अलवर जिले की प्रमुख 30-35 देवबणियों का चित्रांकन है।

इस फिल्म को बनाने का मुख्य उद्वेश्य लोगो को ओरण देवबणियों के प्रति जागरूक करना तथा इनके संरक्षण व विकास के लिए लोगो को प्रेरित करना। ग्रामीण समुदायों की आजिविका व जैव विविधता की दृष्टि से इनके संरक्षण की प्रासांगिकता को उभारना है। चूंकि देवबणी-ओरण जैव-विविधता प्रबन्धन की एक जीवंत परम्परा है। जिसने ग्रामीण समुदायों की आस्था व संस्कृति के सहारे सदियों से जंगल व वन्य प्राणियों को बचाये रखा है। लेकिन आधुनिकता तथा सरकारी नीति के चलते आज ओरण पर कानूनी रूप से समाज का और समाज द्वारा चुनी पंचायत का भी कोई अधिकार नही है।

फिल्म में आरण देवबणियों के विभिन्न पहलुओं जैसे: ऐतिहासिकता, वर्तमान स्थिति, परम्परागत प्रबंधन व्यवस्था, सरकारी नीति तथा इनके संरक्षण में कृपाविस का अनुभव कार्यनीति को दिखाने का प्रयास किया है। इस फिल्म मे विस्तार से समझाया गया है कि कृपाविस ने किस तरह से ग्रामीण समुदायों को अपने देवबणियों के सुधार और विकास में लोगो के पारम्परिक ज्ञान, विज्ञान और सूझ-बूझ में कृपाविस आस्था रखता है तथा जीवत परम्पराओं के शोध, प्रलेखन और पुष्टि में कृपाविस अपनी आवश्यक भूमिका समझता है-इनमें समाज के टिकाउ विकल्प निहित है।

फिल्म 'ओरण -देवबणी री बात' संवर्द्धन हेतु नीति निर्धारकों, योजनाकारों, प्रशासन, स्वैच्छिक संस्थाओं, शिक्षको, राजनेताओं तथा ग्रामीणों के बीच जागरूकता बढ़ाने में सार्थक होगी, ऐसा विश्वास है। कोई भी इच्छुक व्यक्ति, संस्थाऐं, विभाग, शैक्षणिक संस्थाऐं इस फिल्म की सी.डी. प्राप्ती के लिए कृपाविस से सम्पर्क कर सकते हैं।

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस), बख्तपुरा, अलवर (राज०) द्वारा जनहित में प्रसारित।
इस पत्रिका के लिए सहयोग 'विश्व संघ विकास कार्यक्रम ' तथा 'पर्यावरण शिक्षण केन्द्र' से प्राप्त।
मुद्रक: जय बाबा कार्डस एण्ड प्रिन्टर्स, स्टेशन रोड़, अलवर। मो. 9414893348